पेरियार रामासामी नायकर

(17.09.1879 - 24.12.1973)

तमिल राजनीतिज्ञ और सामाजिक सुधारक

जाति : चरवाहा धनगर(गड़ेरिया)

ई.वी. रामासामी पेरियार

जन्म : 17 सितम्बर 1879,

इरोड, मद्रास प्रेजिडेंसी, ब्रिटिश भारत (अब इरोड जिला, तमिलनाडु, भारत)

मृत्यु : 24 दिसम्बर 1973 (उम्र 94)

वेलोर, तमिलनाडु, भारत

अन्य नाम : ई.वी.आर पेरियार, Vaikam Veerar,

व्यवसाय : सामाजिक कारकुन, राजनेता, reformist

राजनैतिक पार्टी : जस्टिस पार्टी

संस्थापक : द्रविदर कड़गम

जीवनसाथी : नगममाई(निधन-1933), मनिअमाई(1948- 1973)

रामासामी पेरियार का भाषण (भाग-2)

रेश्नलिस्ट एसोसिएशन के उद्घाटन समारोह के अवसर पर

22/06/1971

मेट्टूपलायम तमिलनाडु

तर्कवाद

अपने समाज को क्रांतिकारी विचारों की बहुत जरूरत है, तर्कवाद के प्रचार की गति बढ़ाने की जरूरत है। इसीलिए हमने "तर्कवादी संघ"(रेश्नलिस्ट एसोसिएशन) की स्थापना की है। ऐसा तर्कवादी संगठन अचानक आने के कारण कुछ लोग विरोध भी करेंगें। अपना आंदोलन किसी संगठन या व्यक्ति के विरोध में हैं ऐसी अफवाह भी फैला सकते हैं।

हम उन सबके विरोध में हैं कि नहीं, उसके बारे में मैं दृढ़तापूर्वक कहना चाहता हूं, कि हम न्याय के विरुद्ध कभी नहीं खड़े हुए और विवेकशीलता का कभी विरोध नहीं किया। हम अपने संगठन को तर्कवादी संगठन कहते हैं, इसलिए आप स्वयं इस पर विचार करें। हमारा उद्देश्य वही है और वही योग्य भी है।

दूसरे क्या करते हैं जरा उस पर विचार करिए, वे हमें साथ में लेते हैं और हमारे साथ पशुवत व्यवहार करते हैं। वे वर्णाश्रम धर्म संगठन बनाते हैं, उनका उद्देश्य जातियों को बचाने का होता है। वे सनातनियों के संगठन, रूढ़ि, परंपराओं को बचाने व जारी रखने के लिए काम करते हैं।

राम ने क्या किया, कृष्ण ने क्या प्रवचन दिया और ऐसे ही अन्य फालतू विषयों पर ही बोलते रहते हैं। इन सबके लिए फिर वे अधिकार की बात करते हैं। ये तुम्हे स्वतंत्र रूप से चिंतन भी नहीं करने देते। ईश्वर, देवी-देवता, धर्म, धर्म गुरु आदि के बारे में जो बोला जाता है उनके बारे में विचार करने का आपको अधिकार ही नहीं है। हमारा प्रचार उनके ईश्वर देवी देवता के विरोध में है, ऐसी उनकी गलतफहमी है। हमारे प्रचार से उनकी भावनाएं आहत होती हैं ऐसा भी वे चिल्लाते हैं। उसके लिए हम क्या कर सकते हैं। जाने दो उन्हें गलत संगत में और अपना नाश कराके लेने दो, हम कहां तक शूद्र के रूप में अपमान सहते रहें? सच पूछो तो मुझे अपने लोगों की चिंता होती है, हम कहां तक दूसरों का वर्चस्व कबूल करके अपमान और जिल्लत

सहते रहें? कहां तक वे जो कहे उस पर आंख बंद करके विश्वास करते रहें? फिर अपने मस्तिष्क का क्या उपयोग?

आप देख ही रहे हैं कि अब लोग हवा में यात्रा कर रहे हैं। हम सिर्फ ब्राह्मणों के पैर धोकर पीने में ही संतुष्ट रहें क्या? हमारे प्रचार से उनकी भावनाएं आहत होती हैं, ऐसा वे चिल्लाते हैं, तो हम उसकी चिंता क्यों करें?

उनकी भावनाएं हमारी भावनाओं से कोई महान तो नहीं हैं, हमें अपना काम करते रहना है, हमें खतरे और बहुत सी अड़चनों का सामना करना पड़ेगा। इसकी भी हमें जानकारी है। हम अपनी जान भी खतरे में डालने को तैयार हैं, मृत्यु किसी भी क्षण आने की संभावना है। अब शांत बैठकर चलने वाला नहीं है, कारण पहले हमने शांत रहकर दूसरों का आधिपत्य स्वीकार करके देख लिया है। अपनी किसी प्रकार की प्रगति नहीं हो सकी। सिर्फ धनोपार्जन का ही उद्देश्य सामने रखकर शिक्षित लोग भी सुस्त होकर बैठे हैं, और आड़ी टेढ़ी प्रवृत्ति के अपने लोगों को धर्म रक्षा के नाम पर आगे ढकेल दिया गया है। ऐसा नहीं हुआ होता तो अपनी अच्छी प्रगति हो सकती थी, हम कुछ बोलते हैं तो क्रिश्चियन हमारे ऊपर हमला करने दौड पड़ते हैं। दूसरा कुछ बोले तो मुस्लिम हमारा धिक्कार करते हैं। इन दोनों के अलावा जब हम अपने धर्म के बारे में बोलते हैं, तो सिर्फ ब्राह्मण ही हमारा निषेध करते हैं। वह भी परदे के पीछे से सामने आकर नहीं, जो हमारे लोग खुद को नीच शूद्र मानते हैं और माथे पर राख तिलक लगाकर शिव शिव, राम राम करते रहते हैं वे ही आपस में लड़ते रहते हैं।

मेरे विरोध में न्यायलयों में चल रहे मामलों के बारे में मुझे कुछ नहीं कहना है। जब मैंने सेलम में राम की मूर्ति को जूते से पिटाई किया, उस समय मेरे विरोध में एक भी ब्राह्मण कोर्ट में नहीं गया। उल्टे हमारे अपने लोग मेरे विरोध में कोर्ट में गये। उनकी भावनाएं आहत हुईं, ऐसा उन्होंने आरोप लगाया और मुझे कोर्ट से हुकुम आया। उसके बारे में आप लोगों ने अखबारों में पढ़ा ही होगा।

जब तक हम उसे जानलेवा बीमारी समझकर उसका आपरेशन नहीं करेंगें, तब तक हम अपनी समस्याओं का समाधान नहीं कर सकते। यह बीमारी बहुत पुरानी हो चुकी है, इसलिए मैं उस समस्या की जड़ तक जा रहा हूं, सिर्फ ऊपर ऊपर की चर्चा करके इसका निदान संभव नहीं है। इसीलिए हमने क्रांतिकारी विचारों के प्रचार-प्रसार के लिए "तर्कवादी संघ" नाम से यह संगठन बनाया है। यदि हम खुद को निचले दर्जे का समझ रहे हैं और हिन्दू नाम की संकल्पना को मान रहे हैं, तो हम सब शूद्र हैं यह भी मानना ही पड़ेगा। इतना ही नहीं बल्कि हमें शास्त्र, धार्मिक विधि, ईश्वर, देवी देवता और सनातन मतवादी नियमों को मानते हुए ही व्यवहार करना पड़ेगा।
हमें नीच शूद्र किसने बनाया, इस पर हमें विचार करके सवाल नहीं करना चाहिए क्या?
वह तुम्हारा भगवान कृष्ण तो नहीं? यदि वही है तो उसने कहां कहा। ऐसा यदि उसने गीता में कहा है तो हमें अपना जूता निकालकर कृष्ण और गीता को मारना चाहिए कि नहीं? यदि तुमको उससे भय लगता है तो तुम शूद्र बनकर ही रहो ।
मैंने राम को जूता मारा तो मेरा क्या बिगड़ा? वह भी कहता है कि हम शूद्र हैं, उसने शूद्र की हत्या की, शंबूक की तो सिर्फ शूद्र होने के कारण वध किया, उसका हाथ पैर तोड़ दिया। कारण ब्राह्मणों के बजाय उसने शूद्र होकर भी ईश्वर की आराधना किया था। शूद्रों को भगवान की पूजा करने का अधिकार ही नहीं था। उन्हें सिर्फ ब्राह्मणों की ही पूजा करनी चाहिए ऐसा राम का मानना था।
एक झूठी कहानी की रचना की गई, कि किसी शूद्र के द्वारा तपस्या करने के कारण एक ब्राह्मण मर गया। उसका शव राम के सामने लाकर रख दिया गया और राम ने उस शूद्र के वध करने का निर्णय ले लिया।
परंतु मेरा मानना है कि इस प्रकार से ब्राह्मण की मृत्यु कैसे हो गई, उसे तो सीधे स्वर्ग प्राप्ति होनी चाहिए थी। ठीक है ब्राह्मण की मृत्यु हुई तो क्या हुआ? उस

कहानी में ऐसा कहा गया है कि सर्वत्र अधर्म होने के कारण ही रामराज्य में ब्राह्मण की मृत्यु हुई।

राम ने पूछा कि अधर्म कहां घटित हुआ? क्या अधर्म घटित हुआ?

ब्राह्मण कोई समुचित उत्तर नहीं दे सके, उन्होंने राम से कहा तुम स्वयं बाहर जाकर पता करो, इस प्रकार राम बाहर निकला और शंबूक तपस्या करते हुए दिखाई दिया। राम ने पूछा क्या कर रहे हो, उसने उत्तर दिया मैं ईश्वर की आराधना कर रहा हूं। राम चिल्लाया कि शूद्र! तुम्हें सिर्फ ब्राह्मणों की पूजा करनी चाहिए, किन्तु वैसा न करते हुए तेरी ईश्वर की भक्ति करने की हिम्मत कैसे हुई, यह अधर्म है। तेरे शरीर के टुकड़े करने चाहिए और फिर एक कसाई की तरह राम ने शंबूक के शरीर के टुकड़े टुकड़े करके उसकी हत्या कर दी।

हम सब यहां नहीं होते तो ये ब्राह्मण क्या करते जरा कल्पना कीजिए, जो जो ईश्वर की आराधना करते, उनकी ब्राह्मण हत्या कर देते, ऐसा तुम्हें नहीं लगता क्या? अपने लोगों पर वे झूठा दोषारोपण नहीं करते क्या?

हम धर्म शास्त्र का अपमान करते हैं ऐसा वे चीख पुकार करते रहते हैं। पहले से ही वे सत्ताधारियों से वर्णाश्रम धर्म (जाति व्यवस्था) का योग्य तरीके से पालन नहीं किए जाने का आरोप लगा रहे हैं।

गीता

ब्राह्मणों का ऐसा कहना है कि कृष्ण ने जातियों का निर्माण किया है। ऐसा कहा जाता है कि प्रत्येक जाति के विशिष्ट काम का बंटवारा कृष्ण ने ही किया है। शूद्रों का जन्म पैर से हुआ है। कारण पैर अप्रतिष्ठा का अंग समझा जाता है, उन्हें गुलाम की तरह रहना चाहिए और ब्राह्मणों की ही सेवा करनी चाहिए, अन्यथा उन्हें दंड दिया जाएगा। ऐसा भी कहा जाता है कि शूद्र नर्क यातना भोगें, ऐसा दंडविधान कृष्ण ने ही बनाया था।

यह गीता का संदेश है। ब्राह्मणों को अत्यंत प्रतिष्ठित दर्जा देने के कारण वे गीता का आदर करते हैं। किंतु हम यदि हाथ में जूता लेकर कृष्ण की ठुकाई नहीं किए तो हमारे भविष्य का क्या होगा?

हमको उसे चप्पल से मारना चाहिए, ऐसा कहने पर अपने ही लोगों को गुस्सा आता है। लेकिन वह उन्हें नीच कहता है तो लोगों को गुस्सा नहीं आता। हम नीच हैं यह बात लोगों को मान्य है क्या?

ईश्वर देवी देवता धर्म व धर्म शास्त्रों का खुलकर विरोध मत करो। ऐसा कहकर ब्राह्मणों ने हम सबको उध्वस्त कर दिया है। जब हम कुछ बोलते हैं तो वे चीखने चिल्लाने लगते हैं, जब जब हम सत्य कहते हैं वे कहते हैं हमारी भावनाएं आहत होती हैं कुछ न कुछ अप्रिय घटना होने की धमकियां वे देते रहते हैं। इस प्रकार अपने लोगों को उन्होंने प्रतिगामी बनाकर रखने का प्रयत्न किया, हमें दर्जाहीन बनाया, देश भर में आज भी यही चल रहा है ये कैसी शोकांतिका है?

सुशिक्षित लोगों का भी इसी तरह का जीवन है यह शोकांतिका देखकर विदेशी लोग क्या कहेंगे?

मान लीजिए कोई विदेशी व्यक्ति हमारे किसी धार्मिक व्यक्ति से मिला और पूछा कि तुम कहां जा रहे हो? तो उत्तर मिलेगा मैं ईश्वर की पूजा करने मंदिर जा रहा हूं। फिर वह पूछेगा ईश्वर मतलब क्या? तो उसका उत्तर ऐसा होगा कि "ईश्वर का मतलब एक मूर्ति है।" फिर वह विदेशी कहेगा कि मूर्ख है क्या "पत्थर या मिट्टी ईश्वर कैसे हो सकता है? तुमसे ये किसने कहा कि उस मूर्ति में ईश्वर है?

इस प्रकार से कोई विदेशी हमारे लोगों से प्रश्न पूछ सकता है। किन्तु अपने यहां के लोग उसका समुचित उत्तर देने में जरूर अटक जायेंगे। इतना ही क्यों? एकाध मुस्लिम व्यक्ति भी पत्थर में ईश्वर है क्या? यह पूछने के लिए आगे नहीं आयेगा, क्यों? कारण हिन्दू बहुसंख्यक होने के कारण उसे भय रहता है, क्रिश्चियन भी आगे नहीं आयेंगे।

पत्थर में ईश्वर है यह सिद्ध करने के लिए कोई आगे आता है?

परन्तु प्रत्येकजन पत्थर में ईश्वर है ऐसा शांतिपूर्वक विश्वास करते हैं।

मैंने ऐसा पूछा कि स्वर्ग या नर्क किसी ने देखा है क्या? कल कोई हमारे ऊपर ये आरोप न लगाये, कि अपने लोगों की उन्नति के लिए कौन आगे आया? जब सबको ब्राह्मणों के पैर पकड़कर बड़ा होना है तो हमारे समाज का रक्षण कौन करेगा?

इसीलिए मैं "तर्कवादी संघ" की मजबूती पर अधिक जोर देता हूं। यह किसी भी कीमत पर सफल होना आवश्यक है, तभी मनुष्य, मनुष्य की तरह जी सकेगा। प्रत्येक मनुष्य, प्रत्येक मनुष्य से मनुष्य की तरह बर्ताव करे इसके लिए अपना प्रचार अतिआवश्यक है।

इसके लिए हमें बिल्कुल निर्भीक रहना पड़ेगा। इसके लिए हमें किसी भी प्रकार की आग पर चलने को तैयार रहना पड़ेगा।

मुस्लिमों ने अपने धर्म की रक्षा कैसे किया यह तुम सबको पता ही है। उन्होंने कुछ त्याग नहीं किया क्या? ईसाइयों को भी अपनी धर्म रक्षा के लिए अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा, अपने रास्ते में मुझे आशादायक चिन्ह दिखाई पड़ रहे हैं, हमारे लिए परिस्थिति भी अनुकूल है। इसलिए हमें इस सुवर्ण अवसर का फायदा उठाते हुए लोगों के बीच जाकर जनजागरण करने की जरूरत है।

बौद्ध धम्म का नाश ब्राह्मणों ने कैसे किया? उन्होंने हिंसक मार्ग अपनाते हुए बौद्धों का कत्ल किया। उनके घरों को आग लगाया, उनके बौद्ध विहारों पर कब्जा किया।

श्रमण पंथियों का विनष्टीकरण कैसे किया

श्रमण पंथियों के शरीर में धारदार सरिया घोंपकर उनकी निघृण हत्या नहीं किया क्या?

करीब करीब आठ हजार श्रमण पंथियों की उन्होंने हत्या किया। उस घृणास्पद हत्याकांड को त्योहार के रूप में मनाया जाता है। बाद में उन्होंने इन धर्मियों का तेवाराम व प्रबंधम इन ग्रंथों में वह दुष्कृत्य योग्य था ऐसा लिखकर रखा है।

आज वे भी ऐसा आरोप लगाते हैं, कि हम जो प्रचार करते हैं वह अत्यंत कठोर व असहनीय है।

प्रबंधम में क्या लिखा है? उससे हिंसाचार का प्रचार नहीं होता क्या? अन्य सभी धर्मों को नष्ट करो उसमें ऐसा नहीं लिखा क्या?

स्त्री पर बलात्कार करने जैसे कुकर्म के लिए, दूसरे धर्म के लोगों को तंग करने व जान से मारने हेतु हिन्दू भक्त ईश्वर से आशीर्वाद मांगते हुए तुम्हें दिखाई नहीं देते क्या?

तथाकथित पवित्र धर्मग्रंथ 'प्रबंधम' अन्य धर्मियों को परेशान करने व उनकी हत्या की शिक्षा हिन्दुओं को देता है, बाइबल में क्या लिखा है? परमेश्वर पर जो विश्वास नहीं करता वह मूर्ख हैं, सभी धर्मों में ऐसा ही कहा गया है, यदि ऐसा है तो हम क्यों शांत रहें।

"जो धर्म का प्रचार करता है जो ईश्वर की आराधना करता है वह मूर्ख है।"

यह सत्य यदि हम लोगों को बताएं, तो इसमें क्या गलत है?

व्यक्तिगत रूप से किसी एक पर आक्रमण करने के बजाय हम ऐसा कहते हैं---

'ईश्वर कहीं भी नहीं है'

'ईश्वर कतई नहीं है'

'जिसने ईश्वर का निर्माण किया है वह मूर्ख है'

'जो ईश्वर का प्रचार करता है वह हलकट प्रवृत्ति का है'

'जो ईश्वर की आराधना करता है वह जंगली है'

"मैंने ऐसा क्यों कहा, वह मैं बाद में स्पष्ट करता हूं। जिसने आत्मा, स्वर्ग नर्क इत्यादि का निर्माण किया है वह अत्यंत हलकट प्रवृत्ति का व्यक्ति है, इन सब पर जो विश्वास करता है वह महाहलकट है।"

वे कहते हैं हमारे पास जरा भी बुद्धिमत्ता नहीं है। वे कहते हैं हमारे पास दिमाग ही नहीं है, हम मूर्ख व जंगली हैं।

उनकी निराधार टिप्पणियों और आरोपों के प्रचार की हम जरा भी परवाह नहीं करते।

पुनर्जन्म मतलब क्या?

इसका स्पष्टीकरण देनेवाला कोई है क्या?

तुम्हें ऐसा लगता है क्या, कि कोई ऐसी भी जगह है जहां हमारे दिवंगत जीवित हैं?

यह सब झूठा उपदेश सिर्फ ब्राह्मण ही करते हैं, और हमारे मूर्ख लोग उनकी झूठी बातों पर विश्वास करके उन्हें अन्नधान्य देकर उनके सामने साष्टांग दंडवत करते हैं। इस पर ब्राह्मण कहता है कि यह सब मैं तुम्हारे पितरों के लिए ले रहा हूं।

ब्राह्मण से आप यह पूछिए कि हमारे मृत माता पिता को उसने कहां देखा?

स्वर्ग में, नर्क में या पुनर्जन्म होने के बाद इनमें कहीं भी उन्हें देखा है क्या?

उसके पास से समाधान कारक उत्तर नहीं मिलेगा।

ब्राह्मण, यह हमारे लोगों को फंसाकर कुछ भी करने के लिए मजबूर करता है, फिर भी अपने मृत माता पिता के लिए यह सब कुछ देनेवालों में से एक भी व्यक्ति आगे आकर प्रश्न पूछने का कष्ट क्यों नहीं करता?

उल्टे वह कहेगा कि मुझे इसमें कुछ मालूम नहीं पड़ता। मैं अपनी पत्नी व बच्चों के साथ सिर्फ ब्राह्मणों के सामने दंडवत प्रणाम करता हूं।

ऐसे मूर्खतापूर्ण कृत्य को आप क्या कहेंगे?

ऐसे लोगों को हम मूर्ख कहते हैं तो उसमें कुछ गलत क्या है?

ईश्वर

कौन कहता है ईश्वर है? फला फलां व्यक्ति ने ईश्वर को देखा है, यह दावे के साथ कोई भी नहीं कह सकता, वे आंखें मिचमिचाते हुए कहते हैं कि ऐसा किसी ने कहा है! वह स्वयं प्रकट हुआ है।

इस विषय में लोग मुझसे ही वाद-विवाद क्यों करते हैं?

ईश्वर का निर्माण किया गया है ऐसा मैं ही कहता हूं, वे कहते हैं ईश्वर का किसी ने निर्माण नहीं किया है। फिर जब मैं आगे पूछता हूं कि ईश्वर स्वत: प्रकट हुआ, इसकी जानकारी और किसी को नहीं सिर्फ ब्राह्मणों को ही कैसे हुई? वे कहते हैं ईश्वर सर्वशक्तिमान है। यह बात भी उन्हें ही कैसे मालूम पड़ी, अन्य लोगों को क्यों नहीं? क्या बाकी लोग मूर्ख हैं? ईश्वर संबंधित सारे क्रियाकलाप सिर्फ ब्राह्मणों को ही पता है, ऐसा क्यों कहा जाता है? ईश्वर संबंधित रहस्य की जानकारी अन्य लोगों को क्यों नहीं दी जाती?

कारण, हम सब खुली आंख वाले हैं उनसे कड़ाई से पूछताछ तर्क-वितर्क करेंगे, इसका उन्हें भय लगा रहता है।

ईश्वर का निर्माण

शुरुआती काल में ईश्वर नामक किसी भी चीज का अस्तित्व नहीं था। केवल तीन हजार सालों से ईश्वर के बारे में अधिक चर्चा शुरू हुई। उसके पहले ईश्वर आदि के विषय में कोई चर्चा ही नहीं थी, ईश्वर के विषय में किसी को कुछ भी पता नहीं था।

शुरुआत में जब इंसान ने मेघ-गर्जना सुनी, तो भय के कारण उसकी ऐसी समझ बनी। कि इसके पीछे निश्चित ही कोई शक्ति ही होगी। जब वर्षा होने लगी तो उसे ऐसा लगा कि वर्षा होने के पीछे भी कोई न कोई शक्ति अवश्य होगी, जब नदी नाले बहने लगे तो उसे लगा इसके पीछे भी कोई शक्ति जरूर होगी, जब सर्वत्र अंधेरा फैल गया उस पर भी इंसान ने वैसे ही विचार किया। जब चारों तरफ प्रकाश फैला उस पर भी उसने वैसा ही सोचा।

इसी प्रकार विचार करते करते ईश्वर पर विश्वास किया जाने लगा।

सामान्यतया लोगों को ऐसा लगने लगा कि विविध घटनाओं पर विविध ईश्वर नियंत्रण करते हैं।

बाद में इन्द्र को देवताओं के राजा के रूप में स्थापित किया गया। उसके बाद अनेक देवताओं का निर्माण किया गया। एक जन्म के विषय में देखरेख करे, एक जन्मे हुए लोगों की का ध्यान रखे, और एक को प्राणियों को नष्ट करने की जिम्मेदारी। इस तरह कामों का बंटवारा कर दिया गया और उन्हीं को ब्रह्मा, विष्णु और शिव के नाम से संबोधित किया जाने लगा। मनुष्य पर एकाध अनाकलनीय घटना घटित हो गई, तो उस पर किसी अद्भुत शक्ति का नियंत्रण है, लोगों की ऐसी समझ बनती गई। किन्तु उनका वह ईश्वर की तरह आदर नहीं करता था। सिर्फ आज हम मंत्रियों का जितना आदर करते हैं, उतना ही वह इन शक्तियों का आदर करता था। अपने पास जैसे कैबिनेट में अनेक मंत्री होते हैं, उसी प्रकार प्रत्येक घटना के पीछे नियंत्रण करने वाली कोई शक्ति है ऐसी समझ बनती गई।

वेद में भी ऐसा ही कहा गया है कि, किसी विशिष्ट काम के लिए एक ही देवता की नियुक्ति हुई है।

क्रिश्चियन सिर्फ दो हजार साल से ईश्वर पर विश्वास करते हैं। इस्लाम धर्मीय सिर्फ डेढ़ हजार साल से ईश्वर पर विश्वास करते हैं। परन्तु ब्राह्मणों ने तीन हजार साल पहले से ही ईश्वर का निर्माण कर दिया था। पूर्ववैदिक युग में ईश्वर का अस्तित्व नहीं था। वेद की रचना के बाद ही यह सब घटित हुआ। वेद की रचना के बाद ही हिन्दू देवी-देवताओं की निर्मिती हुई।

ईश्वर के बारे में ब्राह्मण क्या कहते हैं? वे कहते हैं ईश्वर का अस्तित्व है। वह कहां है ऐसा पूछने पर कहते हैं कि वह दिख नहीं सकता। आपने पूछा कि कम से कम ब्राह्मणों को तो दिखता है कि नहीं? यदि दिखता है तो उसका आकार कैसा है? इस पर वे कहते हैं उसे स्पर्श नहीं किया जा सकता। वे कहते हैं ईश्वर का आकार भी

नहीं है, जब आप पूछोगे कि फिर उसपर विश्वास कैसे करें, तब वे कहेंगे ईश्वर अदृश्य स्वरूप में रहता है।

यह सब बातें सुनकर ब्राह्मणों को मूर्ख क्यों न कहा जाए? उन्हें बुद्धिमान कैसे माना जा सकता है?

यदि ईश्वर को कोई देख नहीं सकता, स्पर्श नहीं कर सकता या उसके बारे में कुछ जानकारी भी नहीं ले सकता, तो केवल ब्राह्मणों को ही ईश्वर देवी देवताओं के बारे में इतनी जानकारी कहां से मिली?

ईश्वर के बारे में उन्हें ही इतनी जानकारी कैसे?

ब्राह्मण जो कुछ भी प्रचार करते हैं उस पर हमारे लोग अंधे बनकर विश्वास करते हैं।

ईश्वर का अस्तित्व सिद्ध करने के लिए ठोस सबूतों के साथ किसी को तो आगे आना चाहिए, ब्राह्मण उसे रोक सकेगा क्या?

वह कहेगा ईश्वर सर्वशक्तिमान है, वह कहेगा दुनिया की सारा क्रियाकलाप केवल ईश्वर के कारण ही चल रहा है, वह ईश्वर के अनेक गुणों का वर्णन करता है। वह कहता है ईश्वर पवित्र, दयालु, प्रमाणिक व निष्कपटी है। यदि तुमने पूछा कि सब बातों पर विश्वास कैसे करें? तो वह कहेगा लोगों को इस पर विश्वास करना ही चाहिए।

ईश्वर में यदि इतनी अद्भुत शक्ति है तो मैं भी उसके ऊपर विश्वास करने लगूं, मेरे अंदर इतना सा बदलाव लाने में वह क्यों नाकाम है?

यदि वह इतना भी नहीं कर सकता तो मैं उसका आदर क्यों करूं? उसके अंदर की शक्ति कहां है? लोग उसके बारे में जान लें इतना दिखाने के लिए भी यदि जरा सा उनके अंदर वह बदलाव उसकी शक्तियां नहीं कर पा रही हैं, फिर ऐसे ईश्वर का अस्तित्व नकारने से संसार का कौन सा नुकसान होने वाला है।

आज संसार की जनसंख्या लगभग साढ़े चार सौ करोड़ है, इनमें से दो सौ करोड़ लोग नास्तिक हैं।

नास्तिकों का आस्तिकों में परिवर्तन करने की क्षमता किसी भी ईश्वर देवी देवता में नहीं है।

ईश्वर का निर्माण करने के बाद ब्राह्मण शांत बैठ गया क्या?

वह हमेशा ईश्वर का प्रचार करने का इच्छुक रहता है, इसीलिए मैं कहता हूं वह अत्यंत नीच मनुष्य है।

वह कहता है ईश्वर शक्तिशाली है, फिर उसके प्रचार की जरूरत क्यों पड़ती है?

ब्राह्मण क्या क्या करते हैं आप सब देख ही रहे हैं, वे मंदिर बनाते हैं, और ईश्वर को आकार देते हैं। ईश्वर का कोई आकार नहीं यह भी कहते हैं, और ईश्वर का विविध प्रकार का आकार भी देते हैं। ईश्वर के आकार की जानकारी उसने कहां से प्राप्त की?

जो कोई ईश्वर के बारे में बोलता है वह ईश्वर का आकार मनुष्य की तरह ही होने का दावा करता है। अन्य सभी धर्म कहते हैं ईश्वर का कोई आकार नहीं होता। किन्तु सिर्फ ब्राह्मण ही ऐसा दावा करते हैं कि हिन्दू ईश्वर देवी देवता का आकार होता है। ऐसा मानने का क्या मतलब, आकार यह सदा कायम रहता है। विविध आकार प्रकार के ईश्वर देवी देवता के निर्माण के पीछे ब्राह्मणों का स्वार्थ था क्या?

एक ईश्वर का एक सिर, तो दूसरे का दो सिर, चार पैर और छः सिर वाले देवता भी हैं, वे उसी पर रुके क्या? राम का विरोध करने वाले रावण के पास तो दस सिर था, तुमको उसका कारण मालूम है क्या? उनको राम को रावण से महान दिखाना था, हाथों के बारे में भी ब्राह्मणों ने ऐसा ही किया। किसी ईश्वर को दो हाथ, किसी किसी को छः हाथ, किसी किसी देवता को तो अनेक हाथ हैं।

यह सब लोगों को फंसाने के उद्देश्य से किया गया है। लोगों को फंसाने के लिए ही उन्होंने इस तरह की मजेदार कहानियों की रचना की है।

समझदार लोग इन हास्यास्पद बातों को कैसे स्वीकार कर सकते हैं। इस प्रकार की काल्पनिक कहानियों पर विश्वास न रखने से अपना क्या बिगड़ सकता है?
बुद्धिजीवी मनुष्य इन सब बातों पर विचार नहीं कर सकता क्या?
हम सब कितने दिनों तक ऐसी कपोल-कल्पित कथा-कहानियों को सिर हिलाकर सुनते रहेंगे, और शूद्र बनकर रहेंगे। हमारे अंदर जरा भी स्वाभिमान है तो इन मूर्खतापूर्ण विचारों को नष्ट करना ही उचित होगा। वैसे देखा जाए तो अच्छे गुण वाला एक भी ईश्वर और देवता नहीं है।
शिव का उदाहरण लीजिए, उसको पांच सिर थे। ब्रह्मा को भी पांच सिर थे। जिसके कारण शिव पत्नी पार्वती भ्रमित हो जाती थी, इन दोनों में फर्क वह जल्दी नहीं समझ पाती थी, उसने अपनी परेशानी शिव को बताई, वह भी खूब बेचैन हुआ। कुछ उपाय करने का निर्णय लिया, तुमको मालूम है उसने क्या किया? ब्रह्मा का एक सिर शिव ने काट दिया, ताकि पार्वती को पहचानने में अड़चन न हो। भगवानों के इन कृत्यों पर तुम्हें क्या लग रहा है? शिव ने जो किया, वह योग्य था, ऐसा तुम्हें लगता है क्या?
उनसे मैं यह पूछना चाहता हूं कि चार या पांच सिर की जरूरत ही क्या है? वे ऐसा कहते हैं चार सिर चारों दिशाओं की तरफ देखते हैं, और पांचवां जो मध्य भाग में है आकाश की तरफ देखता है। इन सब बातों को स्वीकार किया जाय उसका सबूत क्या है? ऐसी ही कपोल कल्पित बातों का ब्राह्मण मंडली सतत प्रचार करती रहती है।
ईश्वर के निर्माताओं ने ईश्वर का कोई आकार नहीं ऐसा कहा है। उसे अनेक सिर हैं यह भी उन्होंने ही कहा है, ईश्वर सिर्फ तत्वज्ञान है, यह भी उन्होंने ही कहा है। ईश्वर सभी ज्ञात के बाहर की चीज है, ऐसा भी कहा जाता है ईश्वर का कोई विशिष्ट आकार नहीं है। ऐसा अल्वार, नयनमार व महान आदि ने भी कहा है, फिर आजकल

के भगवानों को ही आकार कैसे प्राप्त हो गया? मंदिरों में सादी मूर्ति रखकर उसे ईश्वर कहना और मानना कितना योग्य है?

इसलिए ईश्वर का निर्माण करने वाला नीच और मूर्ख नहीं है क्या? ईश्वर को विशिष्ट आकार किसने दिया? ईश्वर को हम देख नहीं सकते, स्पर्श नहीं कर सकते। यदि यह सत्य है तो दिन में छः बार उसे अन्न देने का क्या मतलब है?

ऐसी निराधार बातों पर बेहिसाब खर्च करने वाले मूर्ख मौजूद हैं, इसीलिए तो ये नीच लोग उन्हें फंसाते रहते हैं।

ईश्वर को अन्न ग्रहण करते हुए किसी ने देखा है क्या? ईश्वर को जीवित रहने के लिए छः छः बार अन्न ग्रहण करने की वास्तव में जरूरत है क्या? वह कौन व्यक्ति है जो ईश्वर के मुंह में घास डालता है? ईश्वर अन्न का पाचन करता है क्या? दिन भर कभी एकाध बार भी ईश्वर को शौच के लिए जाते हुए किसी ने देखा है क्या? किसी ने ईश्वर को पेशाब करते हुए देखा है क्या? सच पूछो तो वह जगह से हिल भी नहीं सकता। फिर वह नित्य क्रिया कहां करता है? इन सब विषयों पर जो कुछ भी विचार नहीं करता, कोई सवाल नहीं करता, उसे ही महान व आस्तिक समझा जाता है। ईश्वर को जब किसी प्रकार की जरूरत ही नहीं है, यदि यह सत्य है तो ब्राह्मण उसकी शादी वगैरह का आयोजन क्यों करते हैं? उसे पत्नी व बच्चे किसलिए चाहिए?

एक ईश्वर की दो पत्नियां हैं। किसी किसी को तो हजारों पत्नियां हैं। ईश्वर को हजारों पत्नियों की क्या जरूरत? इस विषय पर वे विचार भी नहीं कर सकते और इसका उत्तर भी नहीं दे सकते, इसके बाद भी वे यहीं नहीं रुकते, बल्कि प्रतिवर्ष ईश्वर का विवाह समारोह आयोजित करते हैं। जो लोग भगवान की शादी में भक्तिभाव से शामिल होते हैं, वे पूछते भी नहीं, कि पिछले साल जो शादी हुई थी उसका क्या हुआ? क्या पत्नी दूसरे किसी के साथ भाग गई या किसी बीमारी का शिकार होकर मर गई, या कोई ऐसा भी कानून है जिससे भगवान की शादी सिर्फ एक वर्ष तक ही

वैध रहती है। ये प्रश्न पूछने की जरूरत किसी को महसूस होती है क्या? प्रतिवर्ष भगवान की शादी में शामिल होने वाले सही मायने में मूर्ख हैं।

हमको किस तरह मूर्ख बनाया जाता है। देखिए यदि ईश्वर साक्षात सद्गुणों की मूर्ति है, तो इस तरह विविध स्त्रियों से संबंध कैसे रख सकता है, महाकाव्यों में कहा गया है कि सुब्रमण्यम, शिव, विष्णु व कृष्ण इन सभी भगवानों ने स्त्रियां रखी थीं। उनकी पत्नियों के रहते हुए अलग से स्त्रियां रखने की उन्हें जरूरत क्या थी? ऐसा प्रश्न कोई पूछता है क्या? ईश्वर के आचरण व चरित्र पर उन्होंने अनेक कहानियां रची हैं, उनका ईश्वर एक नालायक व्यक्ति की तरह व्यवहार करता था। कुछ भगवानों को तो दूसरों की पत्नियों से बलात्कार करते हुए बताया गया है। कई प्रकरणों में वह जाहिर हुआ है, कई भगवानों ने अपनी गलती कबूल भी की, किसी किसी को कठोर सजा भी हुई। यह सब ईश्वर के नाम पर चल रहा था, ऐसी बातें हिन्दू मंदिरों में त्योहार के रूप मनाये जाते हुए हम देख ही रहे हैं। श्रीरंग का भगवान सिर्फ वेश्या ढूंढ़ते हुए उरैयूर तक आया था, ये ब्राह्मण भगवान को कन्धे पर उठाकर आज भी वहां ले जाते हैं, वे रात भर वहां रुकते हैं, फिर सुबह में वह पत्थर की मूर्ति को लेकर श्रीरंग वापस आते हैं। यह त्योहार प्रतिवर्ष मनाया जाता है। इसी त्योहार की तरह भगवान पहले वेश्यागमन के लिए जाते थे।

नैतिक मान सम्मान की पात्रता का एक भी भगवान नहीं।

शिव और विष्णु का व्यवहार तो अत्यंत घृणास्पद था, जिस प्रकार का वर्णन किया हुआ दिखाई पड़ता है।

इन भगवानों का आदर्श सामने रखकर लोग समाज में अपना दर्जा ऊंचा उठा सकते हैं, ऐसा किसी को लगता है क्या? उसके साथ ही समाज का नैतिक दर्जा ऊपर उठने की कोई संभावना है क्या? भगवान के पास पत्नी व वेश्या भी हो सकती है, इस प्रकार की हिन्दू धर्म के दलदल में समझदार मनुष्य कैसे विश्वास कर सकता है?

ईश्वर दयालु है क्या?

वे कहते हैं कि ईश्वर प्रेम व दया जैसे विशिष्ट गुणों से युक्त है। तुम जाकर स्वयं ही जाकर देखो, भगवानों के पास चाकू, तलवार, त्रिशूल, फरसे, धनुष बाण, हथौड़ा, तीक्ष्ण हथियार और अन्य प्रकार की डरानेवाली सामग्री मिलेगी। इसका अर्थ यही है कि हिन्दू ईश्वर देवी देवता क्या डाकू लुटेरे, हफ्ताखोर या खूनी हत्यारे थे क्या? फिर ईश्वर दयालु है, इस बात पर आप कैसे विश्वास कर सकते हैं? शिव यदि दयालु है तो उसके हाथ में त्रिशूल की क्या जरूरत है, मैं यह सिर्फ मजाक में नहीं कह रहा हूं, इस पर तुम लोगों को गंभीरता पूर्वक विचार करने की जरूरत है। हमें कितना मूर्ख बनाया जा रहा है, इसका तुम्हें एहसास होना चाहिए। इन सभी भगवानों के साथ हम सिर्फ मनुष्य बनकर रहते आये हैं, उसका इन भगवानों को क्या? भगवानों के विविध अवतार किसलिए हुए? भगवान के रूप में विष्णु ने क्या किया? सभी भगवानों ने वास्तव में क्या किया है?

ऐसा कहा जाता है कि उन्होंने अनेक लोगों मार डाला है। उन्होंने असुर, राक्षस और करोड़ों लोगों की हत्या करके उनका नाश किया, जैसे कसाई बकरा काटता है वैसे ही इन भगवानों और देवी देवताओं ने लोगों की जघन्य हत्याएं कीं। रामायण महाकाव्य में ऐसा लिखा है कि, राम ने तीन करोड़ लोगों की हत्या की, उसने पृथ्वी का भार कम किया, ऐसा बोला जाता है(बूमा देवी)।

हिन्दू भगवानों देवी देवताओं के काम का बंटवारा किस तरह किया गया है? सिर्फ जान से मारने, खून करने, लोगों की हत्या करने जैसे ही काम इन्हें दिए गए थे क्या?

तुम यदि विचार करने लगे तो तुम्हें पता चलेगा कि इन देवताओं के बारे में, मंदिरों के बारे में और इस धर्म के बारे में अत्यंत मूर्खतापूर्ण बातें तुम्हारे सामने आयेंगी। इन बातों पर टालमटोल करने वाले मूर्ख हैं। यदि इन बातों का उनसे संबध नहीं होता तो भी, इतने लंबे समय से हमको कैसे कैसे मूर्ख बनाया गया है उस पर विचार करो, कम से कम तुम्हें आज तो इस पर विचार करना ही चाहिए, कि धर्मशास्त्र,

ईश्वर, देवी देवता और मंदिरों के बारे में लिखे गए धर्म ग्रंथों से हमें क्या फायदा हो रहा है। इन लोगों ने हिन्दू धर्म का कोई एकाध पुराण लिखा होता तो भी चलता। किन्तु अनेक पुराणों की रचना हुई, पुराण के नाम पर जो मर्जी में आया वह कहा गया है। वे रामायण के बारे में बोलते हैं, फिर तुरंत कंद और विनायक पुराण के बारे में बोलने लगते हैं। ये पुराण वास्तव में हैं क्या ? उदाहरण के लिए तुम कोई भी पुराण लो, उसमें अश्लील, गंवार व विश्वास न की जा सके ऐसी सामग्री भरी पड़ी है।

वे हिन्दू देवी-देवताओं के बारे में अनेक गप्प मारते हैं किंतु एक भी भगवान-देवता, अश्लीलता, अनैतिकता, अमानवीयता आदि से अलग नहीं है। कम से कम भगवानों, देवी देवताओं को तो इन विकारों से अलग रखना चाहिए था। ईश्वर देवी-देवताओं के नाम पर फंसाने वाली बातें ब्राह्मणों ने लिखी होती, तो भी कोई बात नहीं थी। पहले भोले भाले लोगों को फंसाने में वे सफल हुए, वह भी कोई बात नहीं। मुझे खीझ इस बात पर आती है कि ब्राह्मणों ने सभी भगवानों देवी देवताओं का चरित्र चित्रण दगाबाज, अनैतिक, खूनी, इस प्रकार से किया है। एक भी ऐसा देवता ऐसा है, कि जिसे मनुष्य स्वेच्छा से स्वीकार कर सके?

आज अपने पास अनेक न्यायालय, पुलिस बल, जेल हैं। इन सबका श्रेय इन भगवानों और देवताओं को जाता है क्या?

इसलिए मेरा पक्का विश्वास है कि हिन्दू धर्म के भगवानों और देवी देवताओं के कारण अपने लोग मूर्ख बने हुए हैं।

समाज में अनैतिकता और भयंकर अपराधीकरण के बाढ़ का एक ही कारण है, वह है हिन्दू भगवान और देवी देवता।

आजकल हमारे लोग अत्यंत हिम्मती हुए दिखाई दे रहे हैं, योग्य हो या अयोग्य, अच्छा हो या बुरा, वे हिम्मत से निर्णय ले रहे हैं। प्रत्येक को तर्कवादी बनाकर यदि हम एक नये परिवर्तन की ओर मोड़ने में सफल हुए, तो एक आदर्श समाज का

निर्माण किया जा सकता है। एक बार व्यक्ति तर्कवादी बन गया, तो वह कभी भी दूसरों को तकलीफ देने के बारे में सोचता भी नहीं। तर्कवादी मनुष्य दूसरों की भलाई के बारे में ही विचार करता है। वह अपना पड़ोसी भी अपनी ही तरह मानव है, इस प्रकार का ही विचार करता है।

आज हम क्या देखते हैं, कि जो दूसरों को उध्वस्त करते हैं, वे फिर लोगों को उध्वस्त करने का अवसर ढूंढ़ते रहते हैं। वे समाज द्रोही कृत्यों की तरफ लगातार मुड़ते रहते हैं। इसलिए मैं आप लोगों से विनती करना चाहता हूं, अपने लिए त्रासदायक सत्य कारणों को ढूंढ़कर निकालिए और उन पर विचार करिए ।

हमारे ऊपर थोपे गए अमानवीय जीवन का कारण क्या है?

अपने करोड़ों लोगों के प्रगति और उन्नति में अड़चन निर्माण करनेवाले कारण क्या हैं?

ईश्वर, देवी देवता, धर्म और धर्मशास्त्र की निर्मिती और वैसे ही रूढ़ि, वेद, धर्मगुरु आदि के कारण ही हमें दर्जाहीन जीवन जीने को विवश नहीं होना पड़ा क्या? यह आरोप कर रहा हूं, इसे अन्यथा मत लो, तुम स्वयं इस पर विचार करने लगोगे, तो मैं जो कुछ बोल रहा हूं वह सत्य प्रतीत होने लगेगा।

"ब्राह्मणों ने यह सब कब निर्माण किया। दो से तीन हजार साल पहले ईश्वर देवी देवताओं की रचना की गई। उसके बाद ही उनके बारे में कथा कहानियां लिखी जाने लगीं। मुझे लगता है रामायण दो हजार साल पहले लिखा गया है। क्रिश्चियन धर्म का आगमन भी दो हजार साल पहले हुआ, इस्लाम का जन्म डेढ़ हजार साल पहले का है।"

पेरियार रामास्वामी यांची गाजलेली भाषणे (मराठी)

लेखक : भीमराव सरवदे से साभार

अनुवादक : चन्द्र भान पाल (बी. एस. एस.)